

## पाठ 68

1. यीशु को सूली पर चढ़ाने से पहले लोगों ने उनके साथ क्या किया?

-उन्होंने कोड़े मारे और उनका मजाक उड़ाया।

-उन्होंने उसे पीटा और उस पर थूक दिया।

-उन्होंने उसके सिर पर कांटों का ताज पहनाया।

2. कांटों का ताज किसका प्रतीक था?

-कांटों का ताज परमेश्वर के श्राप का प्रतीक था।

3. जब सैनिकों ने कांटों का ताज यीशु के सिर पर रखा, तो यह किस बात का संकेत था?

-एक संकेत है कि यीशु परमेश्वर का श्राप ले जाएगा।

4. पूरे देश में तीन घंटे तक अँधेरा क्यों रहा?

-तीन घंटे का अँधेरा एक संकेत था।

5. पूरे देश में तीन घंटे के अँधेरे का क्या चिन्ह था?

-परमेश्वर पिता यीशु को क्रूस पर छोड़ रहे थे।

6. पिता परमेश्वर ने यीशु को क्यों त्याग दिया?

-परमेश्वर पिता यीशु को आपके पापों, मेरे पापों और सभी लोगों के पापों के लिए दंड दे रहा था।

-यीशु को तीन दिन और तीन रात तक दफनाया गया था।

-तीन दिन और तीन रातों के अंत में सुबह-सुबह, कुछ महिलाओं ने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर थे, उद्धारकर्ता उनकी कब्र पर गए।

आइए पढ़ें मरकुस 16:1

1-जब सब्त का दिन समाप्त हुआ, तो मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और सलोमी ने मसाले खरीदे, ताकि वे यीशु के शरीर का अभिषेक करने जा सकें।

-ये महिलाएं यीशु की कब्र पर क्यों गईं?

-महिलाएं यीशु के शव का मसालों से अभिषेक करना चाहती थीं।

-यहूदियों का रिवाज था कि दफनाने से पहले शवों का मसालों से अभिषेक किया जाता था।

-क्योंकि यीशु को जल्दबाजी में दफनाया गया था, इसलिए महिलाएं उसके शव का मसालों से अभिषेक नहीं कर पा रही थीं।

-कब्र पर पहुंचने पर महिलाओं ने क्या देखा?

आइए पढ़ें मरकुस 16:2-4

2-सप्ताह के पहले दिन बहुत जल्दी, सूर्योदय के ठीक बाद, वे कब्र के रास्ते में थे

3-और वे आपस में पूछने लगे, कि कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन लुढ़काएगा?

4-परन्तु जब उन्होंने ऊपर देखा तो देखा कि वह पत्थर जो बहुत बड़ा था, लुढ़का हुआ था।

-कब्र को बंद करने वाले बड़े पत्थर को किसने लुढ़काया था?

-परमेश्वर ने पत्थर को लुढ़काने के लिए एक फरिश्ता भेजा था।

-जब महिलाएं कब्र में दाखिल हुईं, तो उन्होंने क्या देखा?

आइए पढ़ें मरकुस 16:5

5-जब वे कब्र में दाखिल हुए, तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहिने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है, और वे घबरा गए।

-जैसे ही महिलाएं कब्र में दाखिल हुईं, उन्होंने एक परी को देखा।

-देवदूत ने महिलाओं से क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 16:6

6- "घबराओ मत," उन्होंने कहा। "तुम यीशु नासरी को ढूँढ़ रहे हो, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था। वह उठा! वह यहां पे नहीं है। उस स्थान को देखो जहां उन्होंने उसे रखा था।"

-स्वर्गदूत ने यीशु के बारे में क्या कहा?

-फरिश्ते ने कहा कि यीशु वहां नहीं थे।

-यीशु वहाँ क्यों नहीं थे?

-क्योंकि यीशु मरे हुआँ में से जी उठा था।

-फरिश्ते ने कहा कि यीशु ने जैसा कहा था, यीशु मरे हुआँ में से जी उठा था।

-देवदूत ने महिलाओं से यह भी कहा कि जाओ और यीशु के शिष्यों को बताओ कि यीशु मरे हुआँ में से जी उठा था।

आइए पढ़ें मरकुस 16:7-8

7-“परन्तु जाओ, उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील को जा रहा है। जैसा उस ने तुम से कहा था, वैसा ही तुम उसे वहां देखोगे।”

8- औरतें कांपती और घबराई हुई थीं, और बाहर निकलीं और कब्र से भाग गईं। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे डरते थे।

-महिलाएं इतनी डरी हुई थीं कि उन्होंने पहले तो शिष्यों को नहीं बताया।

-बाद में, महिलाओं में से एक, मैरी मैग्दलीन, शिष्यों को बताने गई।

आइए पढ़ें मरकुस 16:9-13

9-जब यीशु सप्ताह के पहिले दिन तड़के उठा, तब वह पहिले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया, जिन में से उस ने सात दुष्टात्माओं को निकाला था।

10-उसने जाकर उन लोगों को जो उसके संग थे, और जो विलाप और रो रहे थे, कह सुनाया।

11-जब उन्होंने सुना कि यीशु जीवित है, और उस ने उसे देखा है, तो उन्होंने विश्वास नहीं किया।

12- इसके बाद जब वे देश में घूम रहे थे, तब यीशु उनमें से दो के सामने भिन्न रूप में प्रकट हुए।

13-ये लौट आए और औरों को बता दिया; परन्तु उन्होंने उन पर भी विश्वास नहीं किया।

-हालांकि मरियम मगदलीनी और दो अन्य लोगों ने चेलों को बताया कि यीशु मरे हुआँ में से जी उठा था, फिर भी चेलों ने उन पर विश्वास नहीं किया।



-इसलिए, यीशु स्वयं शिष्यों को दिखाई दिए।

आइए पढ़ें मरकुस 16:14

14-जब वे खा रहे थे तब यीशु ग्यारह को दिखाई दिया; उसने उन्हें उनके विश्वास की कमी और उन लोगों पर विश्वास करने से इनकार करने के लिए उन्हें डांटा, जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था।

-यीशु ने चेलों को क्यों फटकार लगाई?

-क्योंकि चेलों को विश्वास नहीं हुआ कि यीशु मरे हुआओं में से जी उठा है।

-तब यीशु ने चेलों को आज्ञा दी।

आइए पढ़ें मरकुस 16:15

15-यीशु ने उन से कहा, “सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ।”

-यीशु ने अपने शिष्यों को क्या आज्ञा दी थी?

-सारे संसार में जाकर सारी सृष्टि को सुसमाचार का प्रचार करना।

-अच्छी खबर क्या है?

-दैवीय कथन।

-क्या यीशु ने यह आदेश केवल अपने शिष्यों को दिया था?

-नहीं।

-यीशु ने यह आदेश अपने शिष्यों और उन सभी लोगों को दिया जो उस पर विश्वास करते हैं।

-यीशु चाहता है कि वे सभी लोग जो उस पर विश्वास करते हैं, जाकर दूसरों को परमेश्वर का वचन सुनाएं।

-यीशु सभी लोगों से प्यार करता है, और सभी लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाना चाहता है।

आइए पढ़ें यूहन्ना 3:16

16-यीशु ने कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

-इसीलिए मैं तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाने आया हूँ।

-ताकि आपको मरना न पड़े और आग में न जाना पड़े और हमेशा के लिए सजा मिले।

-यीशु को क्यों मरना पड़ा?

-क्या यीशु ने पाप किया?

-नहीं।

-फिर यीशु को क्यों मरना पड़ा?

-चूंकि सभी लोगों ने पाप किया है, हमें पाप के लिए परमेश्वर की सजा का भुगतान करना होगा।

-पाप के लिए परमेश्वर की सजा क्या है?

-मौत।

-क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया है, परमेश्वर की पवित्रता की मांग है कि हमारे पाप का भुगतान मृत्यु के द्वारा किया जाए।

-पाप की कीमत चुकाने के लिए मौत के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

-फिर भी, क्योंकि परमेश्वर हमसे प्यार करता है, परमेश्वर नहीं चाहता कि हम मर जाएं।

-हमारे पाप को मौत की सजा कैसे दी जा सकती है, फिर भी हम जीवित हैं?

-यीशु, उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमारे स्थान पर मर गया।

-यीशु, उद्धारकर्ता परमेश्वर, मर गया ताकि हम जी सकें।

-यह बात शिष्यों को समझ में नहीं आई।

-चेलों को यह समझ में नहीं आया कि यीशु मर जाएगा और फिर भी उन्हें बचाएगा।

-चेलों को यह समझ में नहीं आया कि केवल यीशु की मृत्यु ही उन्हें बचाएगी।

-क्रूस पर यीशु की मृत्यु वह मृत्यु थी जिसने हमारे पापों के लिए भुगतान किया।

-यीशु का लहू जो क्रूस पर बहाया गया था, वह लहू था जिसने हमारे पापों के लिए भुगतान किया।

-परमेश्वर ने हाबिल के बलिदान को क्यों स्वीकार किया और कैन के बलिदान को अस्वीकार कर दिया?

-क्योंकि हाबिल मेम्ने का खून लाया और कैन नहीं लाया।

-परमेश्वर ने मिस्रियों के पहलौठों को क्यों मार डाला और इस्राएलियों के पहलौठों को पार कर दिया?

-क्योंकि इस्राएलियों ने अपने घरों के किवाड़ों को मेमनों के लोहू से ढांप लिया था।

-यीशु परमेश्वर का मेमना है।

-परमेश्वर पिता ने हमारे पापों का भुगतान करने के लिए यीशु को मेम्ने के रूप में बलिदान किया।

-यीशु ने हमें बचाने और हमारे पापों का भुगतान करने के लिए अपना लहू बहाया।

-जब यीशु क्रूस पर मरा, तो उसने कहा, "पूरा हुआ।"

-यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा, "पूरा हुआ"?

-क्या यीशु का मतलब था कि उनका जीवन समाप्त हो गया था?

-नहीं।

-यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा, "पूरा हुआ," क्रूस पर?



-यीशु का मतलब था कि जो काम पिता परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए दिया था वह पूरा हो गया।

-वह काम क्यों पूरा हुआ जो पिता परमेश्वर ने यीशु को दिया था?

-क्योंकि यीशु की मृत्यु ने सभी लोगों के पापों के लिए पूरी तरह से भुगतान किया था।

-क्योंकि यीशु के लहू ने सभी लोगों के पापों के लिए पूरी तरह से भुगतान कर दिया था।

-हम कैसे जानते हैं कि यीशु का सभी लोगों को बचाने का कार्य समाप्त हो गया था?

-क्योंकि यीशु की मृत्यु सभी लोगों के लिए एक सिद्ध बलिदान थी।

-क्योंकि यीशु का लहू सभी लोगों के लिए एक सिद्ध बलिदान था।

-और हम कैसे जानते हैं कि सभी लोगों को बचाने के लिए यीशु का कार्य समाप्त हो गया था?

-क्योंकि परमेश्वर पिता ने यीशु को मरे हुआँ में से जिलाया।

-यदि यीशु का सभी लोगों को बचाने का कार्य समाप्त नहीं होता, तो परमेश्वर पिता ने यीशु को मरे हुआँ में से नहीं जिलाया होता।

-यदि परमेश्वर यीशु के पाप के पूर्ण भुगतान से संतुष्ट नहीं होता, तो परमेश्वर पिता ने यीशु को मृतकों में से नहीं जिलाया होता।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-एक आदमी गाय चुराता है और उसे एक साल जेल में रहना चाहिए।

-साल के अंत में वह जेल से छूट जाता है।

-अगर पुलिस आदमी को जेल से बाहर देखती है, तो क्या वे उसे वापस जेल भेज देंगे?

-नहीं।

-क्यों नहीं?

-क्योंकि वह आदमी एक साल तक जेल में रहा, और गाय चोरी करने के लिए पूरी तरह से भुगतान किया।

-चूंकि यीशु ने सभी लोगों के पापों के लिए पूरी तरह से भुगतान किया था, परमेश्वर ने यीशु को मरे हुएों में से जिलाया।

-जब यीशु की मृत्यु हुई, तो परमेश्वर ने मंदिर के परदे को दो हिस्सों में क्यों फाड़ दिया?

-परमेश्वर ने यह दिखाने के लिए दो भागों में पर्दा फाड़ दिया कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच कोई और अलगाव नहीं था।

-परमेश्वर और मनुष्य के बीच कोई और अलगाव क्यों नहीं है?

-क्योंकि यीशु ने उन सभी लोगों के पापों के लिए पूरी तरह से भुगतान किया है जो हमें परमेश्वर से अलग करते हैं।

-जब यीशु ने अपने शिष्यों को जाने और दूसरों को परमेश्वर का वचन सुनाने की आज्ञा दी, तो यीशु स्वर्ग लौट आए।

आइए पढ़ें प्रेरितों के काम 1:9

9-यीशु के यह कहने के बाद, वह उनकी आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन की आंखों से ओझल कर दिया।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता स्वर्ग में लौट आएगा।

आइए पढ़ें प्रेरितों के काम 1:10

10-जब वह जा रहा था तब चेले आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, कि अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास खड़े हो गए।

-श्वेत वस्त्र पहने वे दो व्यक्ति कौन थे जो शिष्यों के पास खड़े थे?

-वे परमेश्वर के दो स्वर्गदूत थे।

-स्वर्गदूतों ने यीशु के चेलों से क्या कहा?

आइए पढ़ें प्रेरितों के काम 1:11

11-“गलील के लोग,” उन्होंने कहा, “तुम यहाँ खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुझ से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से आएगा जिस रीति से तू ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।”

-स्वर्गदूतों ने कहा कि यीशु धरती पर लौट आएंगे।

-जब यीशु धरती पर लौटेगा, तो वह क्या करेगा?

-क्या यीशु हमें पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाने के लिए पृथ्वी पर लौटेंगे?

-नहीं।

-क्यों नहीं?

-क्योंकि यीशु ने हमें पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाने का काम पहले ही पूरा कर लिया है।

-क्या आपको याद है कि यीशु ने महायाजक से क्या कहा था जब उसने पूछा कि क्या यीशु ही मसीह है?

आइए पढ़ें मरकुस 14:61-62

61-लेकिन ईसा चुप रहे और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर महायाजक ने उस से पूछा, क्या तू धन्य का पुत्र मसीह है?

62- "मैं हूँ," यीशु ने कहा। "और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे।"

-जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, तो यीशु उद्धारकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि न्यायाधीश के रूप में लौटेंगे।

-जब यीशु पृथ्वी पर लौटेगा, तो यीशु उन सभी का न्याय करने के लिए लौटेगा, जिन्होंने उस पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास नहीं किया है।

-जब यीशु पृथ्वी पर लौटेगा, तो यीशु उन सभी को जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं, अनन्त आग की झील में भेज देंगे।